Prabhat Khabar

आचार्य प्रशांत: विज्ञान की खोज में ‘मैं’ की भूमिका

Acharya Prashant: विज्ञान ब्रह्मांड की पड़ताल करता है. लेकिन खोजकर्ता अपनी इच्छाओं और भय को कितना समझता है? आचार्य प्रशांत का प्रश्न है: हम क्या जानते हैं, और जानकर स्वयं को क्या मान लेते हैं?

प्रीतीश सहाय · 17 November 2026

https://www.prabhatkhabar.com/national/acharya-prashant-prl-ahmedabad-science-philosophy-researchers-mind



Acharya Prashant: IIT दिल्ली और IIM अहमदाबाद से शिक्षित आचार्य प्रशांत ने तकनीक और प्रबंधन के बाद वेदांत को अपना कार्यक्षेत्र बनाया. वे प्रशांतअद्वैत फ़ाउंडेशन के संस्थापक और लेखक हैं. उनकी पुस्तक Truth Without Apology तथा गीता और उपनिषदों की व्याख्याओं में आत्मछल, भय और स्वतंत्रता की पड़ताल मिलती है. उनके लिए अहंकार केवल घमंड नहीं, बल्कि स्वयं को उपलब्धियों और सामाजिक पहचान से जोड़ने की प्रवृत्ति है. महिलाओं की स्वतंत्रता, पशुओं और उपभोग पर भी वे इसी दृष्टि से प्रश्न उठाते हैं.

उनकी संवाद-पद्धति प्रश्न की दिशा बदल देती है. वैज्ञानिक किसी बाहरी विषय के बारे में पूछे, तो आचार्य अक्सर ध्यान प्रश्नकर्ता की ओर मोड़ते हैं: जानना कौन चाहता है, और क्यों? मानो प्रयोगशाला का सूक्ष्मदर्शी अचानक शोधकर्ता की तरफ़ घूम गया हो. विज्ञान निष्कर्षों को व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से स्वतंत्र रखने का प्रयास करता है; आचार्य प्रश्नकर्ता की अनजाँची इच्छाओं और आशंकाओं की भी जाँच चाहते हैं. चुनौती यह है: व्यक्ति अपने ही उद्देश्यों का विश्वसनीय निर्णायक कितना हो सकता है?

13 नवंबर 2026 को अहमदाबाद की भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (PRL) में यही दृष्टि वैज्ञानिक शोध के प्रश्नों से जुड़ी. 42वें अमृत राजभाषा व्याख्यान में निदेशक प्रो. अनिल भारद्वाज ने स्वागत किया और ग्रह-विज्ञानी डॉ. मेघा भट्ट ने बातचीत संचालित की. PRL के अनुसार पाँच सौ से अधिक वैज्ञानिक और शोधार्थी ऑनलाइन जुड़े; कुछ परिसर में उपस्थित थे. विषय था ‘गहन जिज्ञासा: विज्ञान, दर्शन और शोधकर्ता का मन’.

सफलता से अलग शोध का मूल्य

डॉ. भट्ट ने जर्मनी में पीएचडी के दिनों को याद किया. मित्र घर और गाड़ियाँ खरीद रहे थे; उन्हें पीछे छूटने का अहसास था.

आचार्य ने उन वर्षों को किसी तरह काटने योग्य समय मानने पर सवाल उठाया. उन्होंने भविष्य में आगे निकलने का आश्वासन नहीं दिया. उनके अनुसार शोधकर्ता ने कुछ अधिक मूल्यवान चुना है; उसका मूल्य दूसरों की उपलब्धियों से क्यों तय हो? “काम ही परिणाम बन जाता है,” उन्होंने कहा. प्रो. भारद्वाज के आकस्मिक खोज यानी ‘सेरेंडिपिटी’ संबंधी प्रश्न पर भी उनका आग्रह अनपेक्षित परिणाम स्वीकारकर आगे बढ़ने पर था.

प्रयोगशाला की ज़रूरत, भीतर की स्वतंत्रता

आचार्य ने कहा कि संस्थान यदि ईमानदार प्रयास से अधिक तय परिणाम पुरस्कृत करें, तो शोधकर्ता भी परिणामोन्मुख होगा. मूलभूत अनुसंधान के लिए धन और स्थापित सिद्धांतों को चुनौती देने पर PRL के पोस्टडॉक्टोरल शोधकर्ता डॉ. निखिल ने प्रश्न उठाया. वे लगभग दो वर्षों से आचार्य के गीता सत्रों से जुड़े हैं.

आचार्य के अनुसार प्रयोगशाला और उपकरण आत्मज्ञान से नहीं मिलते; समाज और सरकार का समर्थन चाहिए. ज्ञान से अधिक रूढ़ियों को सम्मान देने वाले समाज की उन्होंने आलोचना की. शोध को समर्थन न मिले तो काम छोड़ने या ऐसी जगह जाने का विकल्प है जहाँ उसकी कद्र हो. लेकिन प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों से असहमत होने का भय व्यक्तिगत प्रश्न है.

पत्रकार से बातचीत में डॉ. निखिल ने आचार्य की इस बात को महत्वपूर्ण माना कि विज्ञान प्रकृति के काम करने का तरीका बता सकता है, लेकिन ज्ञान का उपयोग किसलिए होगा, इसकी नैतिक जाँच भी आवश्यक है. उन्होंने पूछा: मौलिक शोध निष्काम जिज्ञासा है या अहंकार का नया साधन? धन, प्रकाशन के दबाव और कॉरपोरेट हितों के बीच प्रयोगशाला छोड़े बिना कैसे काम किया जाए, इस पर वे व्यावहारिक मार्गदर्शन चाहते हैं.

ज्ञान और जानने वाला

आचार्य ने उपनिषदों के विद्या-अविद्या भेद से बाहरी संसार और जानने वाले की पड़ताल को जोड़ा. उनके अनुसार विज्ञान में बहुत कुछ अज्ञात है; आत्मपरीक्षण में भय, ईर्ष्या, लोभ और असुरक्षा कभी-कभी ज्ञात होकर भी अस्वीकृत रहते हैं. कार्ल सेगन के ‘पेल ब्लू डॉट’ पर उन्होंने कहा कि ‘मैं छोटा हूँ’ भी अहंकार की नई पहचान हो सकती है. इंटरनेट पर उत्तर खोजने के प्रश्न को उन्होंने AI और जिज्ञासा की मंशा तक बढ़ाया.

समापन पर प्रो. भारद्वाज ने कहा, “आपने आज एक नए अंदाज में हमको सोचने का मौका दिया.” आत्मपरीक्षण की विश्वसनीयता और सार्वजनिक संसाधनों से होने वाले शोध की जवाबदेही के प्रश्न खुले रहे. आचार्य के दर्शन का आग्रह स्पष्ट हुआ: ज्ञान के निष्कर्षों के साथ उस ‘मैं’ की भी जांच, जो उनसे अपना महत्व तय करता है.